लोहपुरुष और लोकनेता सरदार वल्लभभाई पटेल

(Iron Man and People's leader Sardar Vallabhbhai Patel)

डॉ. कल्पना वासुदेव भट्ट

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

सी. बी. पटेल आर्टस कॉलिज, नड़ियाद (गुजरात)

सारांश (Abstract) :

सरदार वल्लभभाई पटेल भारतीय इतिहास के ऐसे महान नेता थे जिनमें **लौह पुरुष की दृढ़ता** और **लोक नेता की संवेदनशीलता** का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने न केवल स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया, बल्कि स्वतंत्र भारत को एक सशक्त, संगठित और अखंड राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में निर्णायक भूमिका निभाई। आज भी सरदार पटेल का जीवन और विचार राष्ट्र-निर्माण, नेतृत्व और प्रशासन के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। किसी भी देश का आधार उसकी एकता और अखंडता में निहित होता है और सरदार पटेल देश की एकता के सूत्रधार थे । राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण को सदैव याद किया जायेगा। सरदार वल्लभभाई पटेल को "लौह पुरुष (Iron Man of India)" की संज्ञा औपचारिक घोषणा से नहीं, बल्कि उनके कर्मों, नेतृत्व और राष्ट्र-एकता के लिए किए कार्यों के आधार पर दी गई सामाजिक एवं ऐतिहासिक मान्यता है। स्वतंत्र भारत की राजनीतिक एकता के निर्माता के रूप में उनका यह नाम आज भी सम्मान और प्रेरणा का प्रतीक है।

प्रस्तावना :

सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद ग्राम में हुआ। उनका व्यक्तित्व अनुशासन, आत्मसंयम और कर्तव्यनिष्ठा का प्रतीक था।

पटेलजी ने कानून की पढ़ाई पूरी की और वकालत का पेशा अपनाया। अपने करियर के प्रारंभिक वर्षों में ही उन्होंने गरीब और किसानों के हितों के लिए काम करना शुरू कर दिया। उनका समाज सेवा और न्याय के प्रति झुकाव बाद में उनके राजनीतिक जीवन की नींव बना।

सरदार पटेल का नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से गहरा जुड़ा हुआ है। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व में **सत्याग्रह आंदोलनों** में भाग लिया और उन्हें महत्वपूर्ण नेतृत्व भूमिका दी। विशेष रूप से, **बारदोली सत्याग्रह (1928)** में उनका नेतृत्व अत्यंत प्रशंसनीय था। इस आंदोलन में किसानों के उत्पीड़न के खिलाफ उन्होंने सफलतापूर्वक ब्रिटिश प्रशासन का विरोध किया। बारदोली सत्याग्रह में सफलता के बाद उन्हें **'सर्वोच्च नेता'** के रूप में सम्मानित किया गया। स्वतंत्रता के बाद, पटेल भारत के पहले **उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री** बने। उन्होंने देश की आंतरिक सुरक्षा, प्रशासनिक ढांचा और नागरिक सेवाओं की नींव रखी। उनकी दूरदर्शिता और निर्णायक क्षमता ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) और पुलिस सेवा (IPS) के संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि उन्होंने स्वतंत्र भारत के 562 रियासतों को मिलाकर एक **सशक्त और अखंड भारत** की स्थापना की।

सरदार पटेल का व्यक्तित्व अत्यंत प्रेरणादायक था। वह सरल जीवनशैली वाले, अनुशासित और न्यायप्रिय नेता थे। उनके नेतृत्व में निर्णय दृढ़, परंतु न्यायसंगत होते थे। उन्होंने दिखाया कि देशभक्ति केवल भाषणों से नहीं, बल्कि कर्मों से साबित होती है। उनके योगदान के कारण भारत में अखंडता, एकता और प्रशासनिक व्यवस्था मजबूत हुई। सरदार पटेल का जीवन आज भी प्रेरणा का स्रोत है। उन्हें भारत सरकार ने 1991 में **भारत रत्न** से सम्मानित किया। उनके जन्मदिन, 31 अक्टूबर को भारत में **राष्ट्रीय एकता दिवस** के रूप में मनाया जाता है। पटेल की स्मृति में अहमदाबाद में **सरदार पटेल स्टेडियम** और उनके विशाल **स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी** का निर्माण किया गया है, जो दुनिया की सबसे ऊँची मूर्ति है।

सरदार पटेल का लेखन उनके द्वारा लिखे गए पत्रों, टिप्पणियों एवं उनके द्वारा दिए गए व्याख्यानों के रूप में एक वृहत् साहित्य के रूप में उपलब्ध है । जिसमें मुख्य है:

भारत विभाजन, गांधी, नेहरू, सुभाष, आर्थिक एवं विदेश नीति, मुसलमान और शरणार्थी, कश्मीर और हैदराबाद इत्यादि |

सरदार पटेल का सम्मान और महत्त्वपूर्ण योगदान:

- स्वतंत्र राष्ट्र में सरदार पटेल ने एकीकरण का मार्गदर्शन किया।
- अहमदाबाद के हवाईअड्डे का नामकरण सरदार वल्लभ भाई पटेल अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र रखा गया।
- गुजरात के वल्लभ विद्यानगर में सरदार पटेल विश्वविद्यालय की स्थापना की गई ।
- महात्मा गांधी ने उन्हें लौह पुरुष की उपाधि दी थी।
- सन 1991 में मरणोपरांत भारत रत्न से सम्मानित किया गया।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल के नाम से गुजरात में एकता की मूर्ति (स्टेच्यू ऑफ़ यूनिटी) स्मारक बनाया गया।
- 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण करना सरदार की महानतम देन थी।
- स्टेच्यू ऑफ़ यूनिटी: स्टैच्यू ऑफ यूनिटी भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री तथा प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को समर्पित एक स्मारक है।

SHABDBRAHM

लौह पुरुष" उपाधि - इतिहास और कारण :

"**लौह पुरुष**" उपाधि से तात्पर्य उस **दृढ़, अटल और निर्भीक नेतृत्व क्षमता** से है, जिसने भारत को भौगोलिक रूप से विभाजित राज्यों के समूह से **एक अखंड राष्ट्र** में परिवर्तित किया। इस उपाधि का अर्थ है:

- लोहे जैसा दृढ़ निश्चय और साहस
- राजनीतिक कठिनाइयों में भी डटकर सामना करना
- व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रहित में निर्णायक कदम उठाना

ये गुण पटेल के व्यक्तित्व और कार्यों में स्पष्ट रूप से दिखाई देते थे, इसलिए आज वे इतिहास में **भारत के पहले महान राष्ट्र-निर्माताओं में से एक** माने जाते हैं। सरदार पटेल को 'लौह पुरुष' और 'लोक नेता' के रूप में जाना जाता है, क्योंकि उन्होंने दृढ़ इच्छाशक्ति, नेतृत्व क्षमता और दूरदर्शिता के साथ भारत की 562 रियासतों को एकीकृत कर देश की अखंडता

सुनिश्चित की। उनका जीवन संघर्ष, साहस और सेवा का प्रतीक है।"लौह पुरुष" की संज्ञा सरदार पटेल को इसलिए दी गई क्योंकि वे राष्ट्रीय संकट के समय कठोर किंतु आवश्यक निर्णय लेने में सक्षम थे। स्वतंत्रता के पश्चात भारत की 562 रियासतों का एकीकरण उनके नेतृत्व की सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है। **"रियासतों का विलय केवल प्रशासनिक कार्य नहीं था, बल्कि यह भारत की राजनीतिक आत्मा को एक रूप देने का प्रयास था | "1** सरदार वल्लभभाई पटेल को "लौह पुरुष (Iron Man of India)" कहा जाता है मुख्यतः उनके राष्ट्र एकता और रियासतों के विलय के काम के कारण। जब भारत को स्वतंत्रता मिली (15 अगस्त 1947), उस समय देश में लगभग 565 रियासतें (princely states) मौजूद थीं, जिनके शासक स्वतंत्र निर्णय ले सकते थे कि वे भारत के साथ विलय करेंगे या अलग रहेंगे।

भारत का एकीकरण :

1947 में जब भारत आजाद हुआ, सरदार पटेल उप प्रधानमंत्री बने। वे गृह मंत्रालय, सूचना व प्रसारण मंत्रालय और राज्य मंत्रालय के प्रभारी थे। उस समय भारत एक बड़ी चुनौती का सामना कर रहा था, क्योंकि देश का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा 565 रियासतों के अधीन था। उन्हें रियासतों को संघ में एकीकृत करने का कार्य सौंपा गया था। उन्होंने कुशलतापूर्वक इसे पूरा किया। जूनागढ़ और हैदराबाद में सेना भेजकर उन्हें स्वतंत्र भारत में शामिल होने के लिए मजबूर करने जैसे कड़े कदम उठाए। इन्हीं कड़े कदमों के कारण उन्हें भारत का लौह पुरुष कहा जाता है। सरदार पटेल को देश की **राजनीतिक एकता सुनिश्चित करने का काम** सौंपा गया। उन्होंने न केवल कूटनीति और समझौते के माध्यम से अनेक रियासतों को भारत में शामिल कराया, बल्कि जहाँ आवश्यक हुआ वहाँ साहस और दृढ़ता का प्रयोग कर श्रेष्ठ राष्ट्रीय हित सुनिश्चित किया। इसी **दृढ़चरित्र, निर्णय-क्षमता और साहस** के लिए ही बाद में उन्हें **"Iron Man of India - भारत का लौह पुरुष"** कहा गया।

यह उपाधि उनके जीवनकाल में औपचारिक रूप से किसी एक व्यक्ति द्वारा घोषित नहीं की गई थी; बल्कि यह समय के साथ जनता, मीडिया और इतिहासकारों के द्वारा संगठित रूप से दी गई मान्यता है – विशेषकर स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में, जब भारत के एकीकरण में उनका योगदान स्पष्ट और सर्वमान्य रूप से प्रशंसित हुआ। यह उपाधि **सरकार द्वारा औपचारिक घोषणा** के रूप में नहीं दी गई थी, पर **इतिहासकारों, जनता, विद्वानों और राष्ट्रीय चिन्तकों** ने उनके कार्यों के आधार पर यह नामकरण किया। यानी इसे **लोकप्रिय और ऐतिहासिक स्वीकार्यता से प्राप्त सम्मान** माना जाता है – न कि एक व्यक्ति-विशेष द्वारा दिए गए शब्द के रूप में।

- सरदार पटेल की इस भूमिका को आगे चलकर **भारत सरकार ने भी सम्मानित किया**:

  1991 में उन्हें पश्चात-मरणोत्तर "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया (भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान)।

  2014 से उनके जन्मदिन (31 अक्टूबर) को "राष्ट्रीय एकता दिवस (Rashtriya Ekta Diwas)" के रूप में मनाया जाता है – यह भी उनकी एकता-निर्माण कार्य की स्मृति में है।

स्टेच्यू ऑफ़ यूनिटी: स्टैच्यू ऑफ यूनिटी भारत के प्रथम उप प्रधानमंत्री तथा प्रथम गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को समर्पित एक स्मारक है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी भारतीय राज्य गुजरात में स्थित है। यह विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है। जिसकी ऊँचाई 240 मीटर है। इसके बाद विश्व की दूसरी सबसे ऊँची मूर्ति चीन में स्प्रिंग टैम्पल बुद्ध की है, जिसकी ऊँचाई 208 मीटर हैं।

लोक नेता : सरदार पटेल

बारडोली सत्याग्रह: 1928 में बारदोली के किसानों के करों के विरोध में सफल नेतृत्व के बाद उन्हें 'सरदार' (नेता) की उपाधि मिली और वे राष्ट्रीय नेता के रूप में उभरे | जन-जागरण: उन्होंने 'कर मत दो' जैसे नारे दिए और किसानों तथा आम जनता को संगठित किया, जिससे उनकी लोकप्रियता बढ़ी | सरदार पटेल केवल सत्ता के केंद्र में बैठे नेता नहीं थे, बल्कि वे जनता

से गहराई से जुड़े हुए लोक नेता थे। खेड़ा और बारडोली सत्याग्रह में उनके नेतृत्व ने किसानों और आम जनता के बीच उन्हें अपार लोकप्रियता दिलाई। सुशील कपूर के अनुसार, पटेल की **"नेतृत्व शक्ति जनता के विश्वास और संगठनात्मक क्षमता से उत्पन्न हुई थी, न कि केवल पद से ।उनका नेतृत्व व्यवहारिक था–वे जनभावनाओं को समझते थे और उन्हें राष्ट्रीय उद्देश्य से जोड़ने की कला जानते थे।"2**

सरदार पटेल लोकतंत्र को अनुशासन और कर्तव्य से जोड़कर देखते थे। उनका मानना था कि स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब वह राष्ट्रीय एकता और प्रशासनिक स्थिरता के साथ जुड़ी हो।**"पटेल का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अराजक स्वतंत्रता के विरुद्ध था और वह उत्तरदायित्वपूर्ण शासन पर आधारित था | "3**

स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री के रूप में सरदार पटेल ने एक सुदृढ़ प्रशासनिक ढांचे की स्थापना की। उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) को राष्ट्र की एकता की रीढ़ बताया। **"पटेल के अनुसार एक निष्पक्ष और अनुशासित सिविल सेवा ही भारत की अखंडता को बनाए रख सकती है |"4**

बारडोली सत्याग्रह का नेतृत्व :

जिस तरह चंपारण सत्याग्रह ने महात्मा गांधी को राष्ट्रीय ख्याति दिलाई थी, वैसी ही प्रसिद्धि बारदोली सत्याग्रह ने वल्लभभाई पटेल को दिलाई थी। 1928 में गुजरात के बारदोली में किसानों ने उच्च करों के खिलाफ विरोध किया था। वल्लभभाई पटेल ने किसानों को सफलतापूर्वक संगठित कर ब्रिटिश कर वृद्धि के विरुद्ध जन आंदोलन का नेतृत्व किया, जिससे कर वृद्धि रद हो गई। इसके बाद ही वल्लभभाई को सरदार (नेता) की उपाधि दी गई थी।

पहली राष्ट्रीय जनगणना का बीड़ा उठाया :

वल्लभभाई पटेल ने जनगणना के उद्देश्य को भी रेखांकित किया और इसके दृष्टिकोण का खाका खींचा। 1950 में अपनी मृत्यु से ठीक 10 महीने पहले, उन्होंने दिल्ली में जनगणना अधीक्षकों के एक सम्मेलन का उद्घाटन किया। सम्मेलन में उन्होंने इस बात पर जोर दिया

कि जनगणना भारत की प्रशासनिक नीतियों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस तरह उन्होंने 1951 में शुरू हुई पहली जनगणना की आधारशिला रखी। "**पटेल का दृढ़ विश्वास था कि बिना सामाजिक और राजनीतिक एकता के स्वतंत्रता निरर्थक है।"5**

संविधान निर्माण में योगदान

वल्लभभाई पटेल भारत के संविधान निर्माण के लिए गठित संविधान सभा के सदस्य थे। उन्होंने संविधान निर्माण के लिए देश भर के प्रतिष्ठित लोगों को एकत्रित करने में महत्वपूर्ण INDIA भूमिका निभाई और आंबेडकर को प्रारूप समिति का सदस्य बनने के लिए राजी भी किया।

अखिल भारतीय सिविल सेवा की स्थापना में निभाई महत्वपूर्ण भूमिका

सिविल सेवाओं का जन्म ब्रिटिश शासन के शुरुआती वर्षों में हुआ था। स्वतंत्र भारत में इसके जारी रहने को लेकर कई लोग संशय में थे। वल्लभभाई पटेल स्वतंत्रता से पहले ही अंतरिम सरकार के गृह मंत्री के रूप में सिविल और पुलिस सेवाओं के भविष्य के मुद्दे पर विचार-विमर्श कर रहे थे। इसी उद्देश्य से उन्होंने अक्टूबर, 1946में प्रांतीय प्रधानमंत्रियों का एक सम्मेलन बुलाया था। उनका दृढ़ मत था कि भारतीयों को एकजुट रखने के लिए एक अखिल भारतीय योग्यता आधारित प्रशासनिक सेवा आवश्यक है। आइसीएस के स्थान पर भारतीय प्रशासनिक सेवा व भारतीय पुलिस सेवा के गठन में उनके प्रयासों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। **"पटेल ने भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) को "भारत की एकता की रीढ़" कहा।"6**

खेड़ा आंदोलन:

यह आंदोलन अंग्रेज सरकार से भारी कर में छूट के लिए किसानों द्वारा किया गया था, जिसकी अस्वीकृति पर सरदार पटेल, गांधी एवं अन्य लोगों ने किसानों का नेतृत्व किया । अंततः सरकार झुकी और उस वर्ष करो में राहत दी गई। यह सरदार पटेल की पहली सफलता थी। सरदार पटेल को गांधी जी की अहिंसा नीति ने प्रभावित किया । इसलिये गांधी जी द्वारा

किये गए सभी स्वतंत्रता आंदोलन जैसे- असहयोग आंदोलन, स्वराज आंदोलन, दांडी यात्रा, भारत छोड़ो आंदोलन जैसे सभी आंदोलनों में सरदार पटेल की भूमिका अहम थी ।

कान्ग्रेस के कराची अधिवेशन में सरदार पटेल की भूमिका 29 मार्च 1931 में कराची में किये गए कान्ग्रेस अधिवेशन में गांधी-इरविन समझौते यानी दिल्ली समझौते को स्वीकृति प्रदान की गई थी । इसकी अध्यक्षता सरदार वल्लभ भाई पटेल ने की थी । इसमें 'पूर्ण स्वराज्य' के लक्ष्य को फिर से दोहराया गया तथा भगतसिंह, राजगुरु व सुखदेव की वीरता और बलिदान की प्रशंसा की गई। यद्यपि कान्ग्रेस ने किसी भी प्रकार की राजनीतिक हिंसा का समर्थन न करने की अपनी नीति भी दोहराई।

कराची अधिवेशन में कान्ग्रेस का प्रस्ताव:

इस अधिवेशन में कान्ग्रेस ने दो मुख्य प्रस्तावों को अपनाया जिनमें एक मूलभूत राजनीतिक अधिकारों से संबंधित था तो दूसरा राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रमों से संबंधित था। मूलभूत राजनीतिक अधिकारों से जुड़े प्रस्ताव में निम्नलिखित प्रावधान थे:

SHABDBRAHM

- ❖ अभिव्यक्ति एवं प्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता।
- ❖ संगठन बनाने की स्वतंत्रता।
- ❖ सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनावों की स्वतंत्रता।
- ❖ सभा एवं सम्मेलन आयोजित करने की स्वतंत्रता।
- ❖ जाति, धर्म एवं लिंग इत्यादि से हटकर कानून के समक्ष समानता का अधिकार।
- ❖ सभी धर्मों के प्रति राज्य का तटस्थ भाव।
- ❖ निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की गारंटी।

अल्पसंख्यकों तथा विभिन्न भाषाई क्षेत्रों की संस्कृति, भाषा एवं लिपि की सुरक्षा की गारंटी।

राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम से संबंधित जो प्रस्ताव पारित हुआ, उसमें निम्नलिखित प्रावधान सम्मिलित थे:

- ❖ किसानों को कर्ज से राहत और सूदखोरों पर नियंत्रण।

- ❖ मज़दूरों के लिये बेहतर सेवा शर्ते, महिला मज़दूरों की सुरक्षा तथा काम के नियमित घंटे।
- ❖ मज़दूरों और किसानों को अपने यूनियन बनाने की स्वतंत्रता।
- ❖ लगान और मालगुजारी में उचित कटौती।
- ❖ अलाभकारी जोतों को लगान से मुक्ति।
- ❖ प्रमुख उद्योगों, परिवहन और खदान को सरकारी स्वामित्व एवं नियत्रंण में रखने का वायदा।

इन प्रावधानों के साथ-साथ कान्ग्रेस ने यह भी घोषणा की कि 'जनता के शोषण को समाप्त करने के लिये राजनीतिक आज़ादी के साथ-साथ आर्थिक आज़ादी भी आवश्यक है'। अतः यह कहना उचित ही है की कान्ग्रेस का 'कराची अधिवेशन' वास्तव में उसकी मूलभूत राजनीतिक व आर्थिक नीतियों का दस्तावेज था।

रियासतों का एकीकरण:

देश की स्वतंत्रता के पश्चात सरदार वल्लभ भाई पटेल उप प्रधानमंत्री के साथ प्रथम गृह, सूचना तथा रियासत विभाग के मंत्री बने।

- ❖ 562 छोटी-बड़ी रियासतों का भारतीय संघ में विलीनीकरण करके भारतीय एकता का निर्माण किया।
- ❖ उड़ीसा से 23, नागपुर से 38, काठियावाड़ से 250 तथा मुंबई, पंजाब जैसे 562 रियासतों को भारत में मिलाया ।
- ❖ जम्मू-कश्मीर, जूनागढ़ तथा हैदराबाद राज्य को छोड़कर सरदार पटेल ने सभी रियासतों को भारत में मिला लिया था।
- ❖ इन तीनों रियासतों में भी जूनागढ़ को 9 नवंबर 1947 को भारतीय संघ में मिला लिया गया और जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया ।

हैदराबाद भारत की सबसे बड़ी रियासत थी । वहाँ के निजाम ने पाकिस्तान के प्रोत्साहन से स्वतंत्र राज्य का दावा किया और अपनी सेना बढ़ाने लगा । हैदराबाद में काफी मात्रा में

हथियारों के आयात से सरदार पटेल चिंतित हो गए । अतः 13 सितंबर 1948 को भारतीय सेना हैदराबाद में प्रवेश कर गई । तीन दिन बाद निजाम ने आत्मसमर्पण कर भारत में विलय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया ।

संदर्भ सूची :

1 **राज मोहन गांधी , Patel: A Life. नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, 1991, pp. 437-445**

2 **सुशील कपूर ,सं , (2016). लोह पुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल , प्रभात प्रकाशन (pp. 89-95)**

3 **Sikata Panda, 1996, Political Ideas of Sardar Vallabhbhai Patel. Deep & Deep Publications, pp. 71-78**

4 **Chopra, 1974, Vol 10, The Collected Works of Sardar Vallabhbhai Patel, pp. 44-46)**

5 **Puran Chandra, 1984, Sardar Patel and National Unity, Sterling Publishers, pp. 56-635**

6 **Pran Nath Chopra, S. 1974, The Collected Works of Sardar Vallabhbhai Patel (Vol. 10) Government of India, pp. 44-46**

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. **बिपिन चंद्र, भारत का स्वतंत्रता संग्राम, ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली,**
2. **रामचंद्र गुहा,भारत : गाँधी के बाद, पेंगुइन इंडिया, 2007,**
3. **Patel, Vallabhbhai. The Memoirs of Sardar Vallabhbhai Patel. Navajivan Publishing House, 1950.**
4. **Sarkar, Sumit. Modern India 1885-1947. Macmillan, 1983.**